

क. चेतावनी (निर्गमन 11)

- ❖ तीन दिन के अंधकार के बाद, फिरौन मूसा पर क्रोधित हो गया और उसे महल में लौटने से मना कर दिया (निर्गमन 10:28)। लेकिन मूसा इस आदेश का पालन नहीं कर सकता था, क्योंकि फिरौन के पहिलौठे की जान दांव पर लगी थी। फिरौन के लिए "परमेश्वर" (निर्गमन 7:1) के रूप में अपनी भूमिका में, उसे उसे चेतावनी देनी थी कि वह क्या करने वाला है (आमोस 3:7)।
- ❖ अब मूसा ही था जो फिरौन के सामने से गुस्से में चला गया। फिरौन की ज़िद और उसके फैसले के नतीजों से नाराज़। मूसा के प्रति सम्मान के बावजूद, कई मिस्रियों ने चेतावनी पर ध्यान देने से इनकार कर दिया (निर्गमन 11:3)।
- ❖ ईश्वरीय न्याय का समय आ गया था (निर्गमन 12:12):
 - घमंडी, अहंकारी और शोषक के लिए: दण्ड, और लूटी हुई रकम लौटाने का दायित्व (निर्गमन 11:4-5, 2)
 - परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वालों के लिए: दण्ड से बचे रहने, और स्वतंत्र होने का (निर्गमन 11:7-8)

ख. तैयारी (निर्गमन 12:1-16)

- ❖ परमेश्वर ने विस्तार से समझाया कि उन्हें क्या करना था ताकि नाश करनेवाला "पार हो जाए", और पहिलौठा न मरे:
 - दसवें दिन उन्हें प्रत्येक परिवार के लिए, या कई परिवारों के लिए एक निर्दोष मेमना अलग रखना था (निर्गमन 12:3-5)।
 - चौदहवें दिन संध्या के समय उन्हें इसकी बलि चढ़ानी थी (निर्गमन 12:6)
 - उन्हें द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे को लहू से अभिषेक करना था (निर्गमन 12:7)
 - उन्हें मांस को उसी रात पूरी तरह से आग में भूँजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाना था (निर्गमन 12:8-10)
 - जब वे उसे फुर्ती से खा रहे थे, तो उन्हें कपड़े पहनकर जाने के लिए तैयार रहना था (निर्गमन 12:11)
 - मिस्र से निकले के बाद, उन्हें सात दिनों तक अखमीरी रोटी खानी थी। (निर्गमन 12:15)
- ❖ परमेश्वर ने अपने लोगों को उसके अनुग्रह को समझने और उसकी आराधना करने के लिए तैयार किया (निर्गमन 12:27)।

ग. लहू और खमीर (निर्गमन 12:17-23)

- ❖ चौदहवें दिन संस्कार में दो तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई: लहू और खमीर।
- ❖ उन्हें अपने घरों से खमीर को निकाल देना था और इसके बिना रोटी (अखमीरी रोटी) बनानी थी। चूँकि प्रस्थान निकट था, इसलिए उनके पास इसके शुरुआती चरणों के दौरान खमीर नहीं होना था (निर्गमन 12:17-20)। यह खमीर पाप का प्रतीक है, और बिना खमीर की रोटी मसीह यीशु में नए जीवन का प्रतीक है (1 कुरिंथियों 5:6-8; 2 कुरिंथियों 5:17)।
- ❖ लहू उद्धारक तत्व था। यह यीशु के लहू का प्रतिनिधित्व करता था - जिसे उसने क्रूस पर बहाया था - ताकि, न्याय के समय, परमेश्वर हमारी निंदा को छोड़कर "पार हो जाए" (1 यूहन्ना 1:7; 2:1-2)।
- ❖ वह जूफा जिससे लहू छिड़का जाना था (निर्गमन 12:22) पाप से शुद्धिकरण का प्रतीक है (भजन संहिता 51:7)।

घ. याद रखें और सिखाएँ (निर्गमन 12:24-28)

- ❖ मिस्र से बाहर लाने से पहले ही, परमेश्वर ने इब्रानी परिवारों को हर साल अपने बच्चों को अपना इतिहास बताकर उसे संरक्षित करने की शिक्षा दी थी (निर्गमन 12:24-27)।
- ❖ तब से, फसह एक पारिवारिक उत्सव बन गया। माता-पिता के लिए अपने बच्चों को परमेश्वर का ज्ञान देने का एक अवसर।
- ❖ छुड़ाए जाने की कहानी को विस्तार से और व्यक्तिगत रूप से समझाया जाना था (व्यवस्थाविवरण 26:5-9)।
- ❖ इसमें हमारे लिए एक बहुत ही खास सबक छिपा है। हमें अपने बच्चों को अपना विश्वास बताना चाहिए। हमें उन्हें बताना चाहिए कि परमेश्वर ने क्या किया है, न केवल इतिहास में, बल्कि हमारे अपने जीवन में भी। हमें उसके सामने झुकना चाहिए और उसकी आराधना करनी चाहिए (निर्गमन 12:27)।

ङ. दसवीं विपत्ति (निर्गमन 12:29-30)

- ❖ फिरौन ने बिना किसी अपवाद के सभी इब्रानी लड़कों को मार डालने का आदेश दिया था (निर्गमन 1:22)। जबकि परमेश्वर ने केवल पहिलौठे पुत्र की सशर्त मृत्यु निर्धारित की थी (निर्गमन 12:29)। हर घर में जिस में मेमने के खून का अभिषेक नहीं किया गया था, वहाँ कम से कम एक व्यक्ति की मृत्यु हुई (निर्गमन 12:30)।
- ❖ परमेश्वर का न्याय मिस्र के देवताओं पर पूरी शक्ति से गिरा था, जिनका प्रतिनिधि फिरौन था (निर्गमन 12:12)।
- ❖ किसी भी मिस्री देवता ने मदद के लिए हाथ नहीं बढ़ाया, न ही फिरौन इस आपदा को रोकने के लिए कुछ कर सका।
- ❖ फिरौन की तरह, हमारे पाप दूसरों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। लेकिन, मूसा की तरह, हमारी वफ़ादारी और दृढ़ता कई लोगों को बचा सकती है।